एस.सी.ई.आर.टी. बिहार द्वारा यूनिसेफ, बिहार के सहयोग से विकसित सेवा पूर्व दो-वर्षीय डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजूकेशन (डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम
(Syllabus)

RAMESHWAR SINGH
TEACHER'S TRAINING
COLLEGE, GAYA:
(BIHAR).

शिक्षा के परिप्रेक्ष्य-1

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : बचपन और समाजीकरण

- बच्चे तथा बचपन—सामाजिक-सांस्कृतिक अवधारणा।
- समाजीकरण की समझ—अवधारणा, प्रकृति, कारक एवं सन्दर्भ।
- बच्चे, बचपन एवं समाजीकरण—माता-पिता, परिवार, पड़ोस एवं समुदाय की भूमिका।

इकाई-II : विद्यालय तथा समाजीकरण

- शिक्षा, विद्यालय तथा समाज—अन्तर्सम्बन्धों की पड़ताल।
- विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया—विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ।
- शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालय—सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक आधार।

इकाई-III : शिक्षा के ज्ञानमीमांसीय (Epistemological) विमर्श

- शिक्षा—उद्देश्य, प्रकृति, मूल्य तथा विभिन्न दार्शनिक अवधारणाओं की समझ।
- ज्ञान के विभिन्न रूप—प्रत्यय, अनुभव, कौशल तथा सूचना।
- ज्ञान प्राप्ति के साधन—बुद्धि, तर्क, समीक्षा, संवाद, चिन्तन, अनुभव, प्रयोग, भाषा तथा परिवेश।

इकाई-IV : शिक्षाविदों के मौलिक लेखन की शिक्षाशास्त्रीय समझ

- ज्योतिबा फुले—दो शैक्षिक लेख/वक्तव्य।
- महात्मा गाँधी (हिन्द स्वराज)—सामाजिक दर्शन और शिक्षा के सम्बन्ध को रेखांकित करते हुए।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर (शिक्षा)—सीखने में स्वतन्त्रता एवं स्वायत्तता की भूमिका को रेखांकित करते हुए।

- गिजुभाई बधेका (दिवास्वप्न)—शिक्षा प्रयोग के विचार को रेखांकित करते हुए।
- जाकिर हुसैन—दो शैक्षिक लेख।

सन्दर्भित पुस्तक

E0631 शिक्षा के परिप्रेक्ष्य —गुरसरनदास त्यागी

बाल विकास व मनोविज्ञान-1

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : बाल विकास : अवधारणा एवं समझ

● बाल विकास—अर्थ, प्रकृति, स्वरूप एवं महत्त्व। ● वृद्धि एवं विकास—सिद्धान्त, कारक एवं आयाम। ● बाल विकास में परिवार, शिक्षक, समुदाय एवं जन-संचार (Mass Media) की भूमिका।

इकाई-II : शारीरिक व मनोगतिक विकास (Physical & Psycho-motor Development)

● शारीरिक विकास—परिचय, महत्त्व और सिद्धान्त। ● मनोगतिक विकास—परिचय, महत्त्व और सिद्धान्त। ● बाल स्वास्थ्य तथा विकास में आहार, पोषण, खेल, व्यायाम व योग की भूमिका। ● शारीरिक एवं मनोगतिक विकास में अभिभावकों तथा शिक्षकों की भूमिका एवं दायित्व।

इकाई-III : सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास (Social and Emotional Development)

● सामाजिक विकास—अर्थ, स्वरूप, प्रभावी कारक एवं महत्त्व। ● संवेगात्मक विकास—अर्थ, संवेग के प्रकार, कार्य एवं विकास के चरण। ● सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास में परिवार, समवय समूह, समुदाय, शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका।

इकाई-IV : संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)

● संज्ञानात्मक विकास—अर्थ, स्वरूप एवं सिद्धान्त (पियाजे और वायगोत्सकी के विशेष सन्दर्भ में)। ● बुद्धि—अर्थ, प्रकार, बहु बुद्धि की समीक्षात्मक ज्ञान, सीखने-सिखाने पर प्रभाव। ● सृजनात्मकता—अवधारणा, प्रकार एवं महत्त्व। ● बच्चों की संज्ञानात्मक विकास में परिवार, शिक्षक तथा जन-संचार की भूमिका।

प्रस्तावित कार्य—

- समाचार-पत्र से दस आलेख एकत्र करना जिसमें बाल्यावस्था के दौरान देखभाल से सम्बन्धित मुद्दे समाहित हों।
- विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों जैसे—हाशियाकृत (Marginalised) समूह के बच्चे, झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले बच्चे (Slum & Street Children) तथा खास जरूरतों (Speical Needs) वाले बच्चों का केस प्रोफाइल तैयार करना।
- बच्चों की विभिन्न रूचियों को सूचीबद्ध करना तथा रूचियों के विकास का अध्ययन।
- शारीरिक विकास के साथ होने वाले सामाजिक, सांवेगिक मानसिक एवं बौद्धिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन (5 से 14 वर्ष) एवं चार्ट तैयार कर प्रस्तुतीकरण।
- मध्याह्न भोजन के उपरान्त कक्षा में बच्चों के सीखने में रूचि का अवलोकन तथा समूह चर्चा।

सन्दर्भित पुस्तकें

E0630 बाल विकास व मनोविज्ञान —डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव

विद्यालय की समझ व कक्षा प्रबन्धन-1

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : विद्यालय संगठन की समझ

● विद्यालय संगठन : अवधारणा, संरचना, प्रकार व आवश्यकता। ● विद्यालय निर्माण योजना के विभिन्न आयाम : * भौतिक संसाधन (भवन, कक्षा, उपस्कर, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेल परिसर) * मानव संसाधन (प्राचार्य, शिक्षक, अन्य कर्मी) * वित्तीय संसाधन (अनुदान, वित्त-व्यवस्था) * निर्धारित मानकों की समझ। ● विद्यालय-समुदाय सहभागिता : * विद्यालय शिक्षा समिति * अभिभावक शिक्षक संघ * विद्यालय प्रबन्ध समिति * अन्य संस्थाओं के साथ सम्बन्ध (यथा—पंचायती राज की संस्थाएँ)।

इकाई-II : कक्षाकक्ष प्रक्रियाओं की समझ व प्रबन्धन

● कक्षाकक्ष—अवधारणा, आवश्यकता, आधारभूत संरचना, पारम्परिक, सृजनात्मक व नवाचारी कक्षा। ● कक्षाकक्ष संचालन—कक्षा की व्यवस्था, बालकेन्द्रित व लोकतान्त्रिक कक्षा की संकल्पना, पाठ योजना निर्माण, क्रियान्वयन तथा स्वमूल्यांकन। ● पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ—महत्त्व, योजना व क्रियान्वयन (गतिविधियाँ, कला, खेल इत्यादि)। ● अनुपूरक शिक्षण—आवश्यकता, योजना एवं क्रियान्वयन। ● प्रमुख चुनौतियाँ—अनुशासन, बहुकक्षीय शिक्षण, समावेशी शिक्षण, संसाधनों की अनुपलब्धता।

इकाई-III : आकलन व मूल्यांकन की समझ

● आकलन व मूल्यांकन—अवधारणा, आवश्यकता एवं सीमाएँ। ● मूल्यांकन की विधियाँ—* रचनात्मक (Formative) व संकलनात्मक (Summative) * कसौटी आधारित (Criteria referenced) * मानक आधारित (Norm referenced) ● सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन—योजना व कार्यान्वयन। ● प्रगति रिपोर्ट का विश्लेषणात्मक अध्ययन—शिक्षा, विद्यार्थी, शिक्षक, विद्यालय व समुदाय के सन्दर्भ में।

इकाई-IV : विद्यालयी दस्तावेजों की समझ

● विद्यालयी रिकार्ड—आवश्यकता, संकलन, रख-रखाव व सीमाएँ। ● विभिन्न रिकार्डों का अध्ययन : यथा—नामांकन पंजी, पाठ्य-पुस्तक पंजी, मध्याह्न भोजन पंजी, स्थानान्तरण पंजी, उपस्थिति पंजी, परीक्षा पंजी इत्यादि। ● शिक्षक डायरी व विद्यार्थी प्रोफाइल—आवश्यकता, महत्त्व व निर्माण।

प्रस्तावित कार्य—

- लोकतांत्रिक व समावेशी शिक्षा के लिए विद्यालय निर्माण योजना तैयार करना।
- विद्यालय में मध्याह्न भोजन के प्रबन्धन व वितरण का अध्ययन तथा विश्लेषण।
- विभिन्न प्रकार के अभिलेखों के संधारण हेतु प्रबन्धन की योजना तैयार करना।
- शिक्षक-अभिभावक सभा का आयोजन करना।
- कक्षाकक्ष के विभिन्न भागों का अधिगम सामग्री के प्रदर्शन के लिए प्रयोग हेतु प्रबन्धन।
- विद्यालय में आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित जानकारियों को एकत्र करना तथा कार्य-योजना तैयार करना।
- विद्यालय में वार्षिक दिवस का आयोजन।
- पुस्तकालय प्रबन्धन-संचालन का अध्ययन।
- पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की विषयवार सूची तैयार करना।
- विद्यालय अनुभव कार्यक्रम/इंटर्नशिप के दौरान विभिन्न विद्यालयी पंजियों का विश्लेषण करना।

सन्दर्भित पुस्तक

E0632 विद्यालय की समझ व कक्षा का प्रबन्धन —एस. पी. सुखिया

विद्यालय और शिक्षा नीति

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : विद्यालय का नाम

किसी विद्यालय का नाम, उसकी स्थापना से लेकर आज तक में किये गये परिवर्तन स्वयं में शिक्षा नीति के विकासक्रम का संकेत होते हैं। उदाहरण के लिए अगर विद्यालय का नाम 'राजकीय कन्या उत्क्रमित उच्च विद्यालय' है तो इस नाम के प्रत्येक शब्द की मदद से शिक्षा नीति के इतिहास-क्रम को जाना और खोजा जा सकता है। इस कार्य के लिए देश व राज्य-स्तर के प्रमुख दस्तावेजों में उपलब्ध सूचनाएँ इकट्ठी की जानी चाहिए। स्थानीय इतिहास, समुदाय के वरिष्ठ सदस्यों की वाचित स्मृति और विद्यालय में उपलब्ध पुराने दस्तावेजों से मदद ली जा सकती है।

इकाई-II : विद्यालय का भवन

विद्यालय का भवन स्वयं में विद्यालय के विकास की कहानी समेटे रहता है। विद्यालय की भूमि का स्वामित्व, विद्यालय की इमारत का शिल्प विन्यास, कमरों की संख्या, पेयजल की व्यवस्था, शौचालय, खेल का मैदान, प्रार्थना स्थल, बगीचा, भण्डार गृह, चारदीवारी रसोईघर, आदि ऐसे कई तथ्य हैं जिन पर गौर किया जाना चाहिए। निर्माण कब हुआ, उसे कब जोड़ा गया, ऐसे काल-सन्दर्भ भवन के विकास को शिक्षा-नीति के इतिहास से जोड़ने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड' तथा वर्तमान में 'शिक्षा के अधिकार' कानून विद्यालय के भवन से जुड़ी अपेक्षाओं की पड़ताल का अवसर देते हैं। विद्यालय भवन निर्माण में प्रयुक्त वित्तीय योगदान आदि को भी जाना जाना चाहिए।

इकाई-III : विद्यालय में शिक्षक

विद्यालय में आये परिवर्तनों के साथ-साथ शिक्षक के पेशे व अपेक्षित भूमिका में भी कई महत्त्वपूर्ण बदलाव होते रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, शिक्षक की योग्यता, नियुक्ति, प्रशिक्षण व वृत्तिक विकास (सेवापूर्व व सेवाकालीन), पदोन्नति, स्थानान्तरण, प्रधान-शिक्षक अथवा प्रधानाचार्य की व्यवस्था, विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात, इत्यादि से सम्बन्धित समय-समय पर निर्धारित नियमों, प्रावधानों व अनुशंसाओं ने विद्यालय में शिक्षक की भूमिका को बड़ी गहराई से प्रभावित किया है। अतः इस सन्दर्भ में शिक्षक के जीवन से सम्बन्धित नीतिगत पहलुओं को भी समझना चाहिए। इस इकाई में शिक्षक सम्बन्धी विभिन्न दस्तावेजों की मदद से विद्यालय में शिक्षक के विभिन्न आयामों को समझा जायेगा। आप समकालीन सन्दर्भ में शिक्षक सम्बन्धित नीतियों से परिचित हो सकेंगे तथा यह समझ पायेंगे कि इन नीतियों ने विद्यालय में शिक्षकों की भूमिका को कैसे प्रभावित किया है। साथ ही, आप अध्ययन के लिए एक विद्यालय को लेंगे तथा उसके आरम्भ होने से लेकर अभी तक शिक्षक से जुड़ी सूचनाओं सम्बन्धी जो भी दस्तावेज उपलब्ध हैं, उनके आधार पर नीतियों के प्रभावों को समझने का प्रयास करेंगे। उदाहरण के तौर पर, आप उस विद्यालय के सन्दर्भ में संख्या, आयु, विषय, लिंग, इत्यादि के आधार पर शिक्षकों का विश्लेषण करेंगे।

इकाई-IV : पाठ्यक्रम

विद्यालय में पढ़ाए जा रहे विषयों की संख्या, उनके नाम तथा विषयों के बीच के अन्तर्सम्बन्ध की छानबीन प्रशिक्षुओं द्वारा की जानी चाहिए। विद्यालय में पढ़ाए जा रहे विषयों का समूहीकरण अथवा विभाजन किस आधार पर किया गया है, इसे नीतियों के आलोक में जानना चाहिए। साथ ही साथ शिक्षण माध्यम के रूप में भाषा के सन्दर्भ में भी विद्यालय के इतिहास तथा वर्तमान को शिक्षा नीतियों के आधार पर समझना होगा। अगर विद्यालय में शिक्षण केवल एक भाषा द्वारा किया जा रहा है अथवा द्विभाषा या त्रिभाषा समीकरणों का प्रयोग हो रहा है तो उनके लागू होने में विभिन्न शिक्षा नीतियों के सुझावों व हस्तक्षेपों को उनकी वृहत्तर पृष्ठभूमि में जानना होगा।

इकाई-V : परीक्षा

विद्यालय में परीक्षा कैसे ली जाती है, यह विद्यार्थियों के स्तर के मूल्यांकन के लिए महत्त्वपूर्ण है। परीक्षा सम्बन्धी सुझावों के सन्दर्भ में प्रमुख शिक्षा नीतियों तथा दस्तावेजों (यथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 और शिक्षा के अधिकार के कानून आदि) के सुझावों को जानकर प्रशिक्षु वर्तमान परीक्षा व्यवस्था के विभिन्न आयामों का अध्ययन करें। उनसे यह अपेक्षा की जानी चाहिए कि वे विद्यालय में परीक्षा के परिणामों का विगत 4-5 वर्षों के आँकड़ों का विश्लेषण करेंगे।

प्रस्तावित कार्य—

- विभिन्न माध्यमों द्वारा अपने विद्यालय (जहाँ आप सेवारत हैं) से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों को एकत्र करने के लिए एक विस्तृत योजना का निर्माण करें।
- विद्यालयी शिक्षा से जुड़े विभिन्न दस्तावेजों व रिपोर्टों का संग्रह करें।
- ऊपर उल्लेखित विषयवस्तु के अनुरूप उन दस्तावेजों व रिपोर्टों के विभिन्न भागों को वर्गीकृत करें।
- अपने विद्यालय से भिन्न किसी अन्य विद्यालय का भ्रमण करें तथा उसके इतिहास के बारे में पता लगायें।
- विभिन्न समकालीन शिक्षायी योजनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी इकट्ठा करें तथा अपने विद्यालय में उसके प्रभावों का अध्ययन करें।
- अपने विद्यालय एवं अन्यत्र उपलब्ध अपनी रुचि के किसी एक विषय के कुछ पुराने प्रश्न-पत्रों (1954 के बाद के) को आधार बनाकर प्रश्न-पत्रों में हुए परिवर्तनों को रेखांकित करते हुए एक प्रतिवेदन तैयार करें।
- समान स्कूल परीक्षा आयोग, बिहार द्वारा बिहार की स्कूली शिक्षा, शिक्षक, प्रशिक्षण, शिक्षा पर होने वाले व्यय सम्बन्धी किसी एक विषय की अनुशंसाओं की समीक्षा करें।

सन्दर्भित पुस्तकें

E0628 विद्यालय और शिक्षा नीति —पी. डी. पाठक

भाषा और शिक्षा

पूर्णांक : 100 (70 + 30)

न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी

इकाई-I : भाषा की प्रकृति

- भाषा का अर्थ, ● भाषा, प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में, ● भाषा, समझ के माध्यम के रूप में, ● भाषा, संप्रेषण के माध्यम के रूप में,
- भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था—
    - ध्वनि संरचना
    - वाक्य संरचना
    - शब्द संरचना
    - प्रोक्ति (संवाद) संरचना
- भाषा की विशेषताएँ।

इकाई-II : भाषायी विविधता व बहुभाषिता

● भारत का बहुभाषिक परिदृश्य : भारत में भाषाएँ एवं भाषा-परिवार। ● बिहार का बहुभाषिक परिदृश्य। ● बहुभाषिकता के आयाम : बौद्धिक आयाम, शिक्षणशास्त्रीय आयाम ● भाषाओं के सन्दर्भ में संवैधानिक प्रावधान

- अनुच्छेद 343-351
- आठवीं अनुसूची

इकाई-III : बच्चे और भाषा

- बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना
    - * विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषाई पूँजी
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? (स्किनर, चॉमस्की, वायगोत्स्की और पियाजे के विशेष सन्दर्भ में)
- भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अन्तर।

इकाई-IV : विद्यालय में भाषा

- भाषा विषय के रूप में तथा भाषा माध्यम के रूप में
- भाषा सीखने-सिखाने के उद्देश्यों की समझ
    - * कल्पनाशीलता   * सृजनशीलता   * संवेदनशीलता
    - * भाषा के आधारभूत कौशलों—सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखना का विकास
    - * शुरुआती पढ़ना-लिखना—अवधारणा एवं महत्त्व।
- लिपि का अर्थ
    - * क्या किसी भाषा तथा किसी लिपि के मध्य अनिवार्य सम्बन्ध है।
    - * किसी सीखने को भाषा सीखने के परिप्रेक्ष्य में समझना।
- लिपि और भाषा

इकाई-V : भाषा का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक सन्दर्भ

● भाषा और बोली—भाषा और बोली में अन्तर करने के विचार को भाषा वैज्ञानिक आधार पर परखना। ● भाषा और अस्मिता। ● भाषा और सत्ता। ● भाषा और लिंग।

प्रस्तावित कार्य—

● अपने आस-पास बोली जाने वाली भाषाओं का सर्वेक्षण करके, भाषायी विविधता पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। ● अपनी मातृभाषा के किन्हीं 20 शब्दों की सूची तैयार करते हुए यह अध्ययन कीजिए कि आपके क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, मैथिली, मगही, भोजपुरी, अंगिका, वज्जिका आदि) में उनके क्या प्रयोग हैं ? ● 3 साल एवं 10 साल के एक-एक बच्चे के साथ अपनी बातचीत को रिकार्ड करके उसकी भाषा की विशेषताओं का अध्ययन तथा तुलनात्मक विवरणी तैयार कीजिए। ● किन्हीं तीन स्थानीय अखबारों की एक-एक प्रति का अध्ययन करके भाषा की बहुभाषिक विशेषताओं पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। ● गणित तथा विज्ञान की एक-एक अवधारणा का चुनाव करके बच्चों इन अवधारणाओं की समझ बनने में भाषा की क्या भूमिका है? इसका अवलोकन अपने अभ्यास शिक्षण के समय करें तथा अपने विचारों को लिखें। ● मान लीजिए भारत की राजभाषा हिन्दी के स्थान पर संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज कोई अन्य भाषा होती तो क्या होता ? इस आधार पर भाषा, समाज और सत्ता के मध्य अन्तःसम्बन्धों को रेखांकित कीजिए।

सन्दर्भित पुस्तक

E0629 भाषा और शिक्षा —डॉ. रामशकल पाण्डेय

ENGLISH LANGUAGE TEACHING-I

Full Marks : 100 (70 + 30)   **Minimum Self Study Time : 70 Hrs.**

Unit-I : Need and importance of English Language

● English and the Age of Globalisation ● Status of English in India and Bihar ● The concept of the mother tongue (ML), Second language (SL), Foreign language (FL) and the learning of English; ● Multilingualism : Nature, and its use as a resource for language teaching.

Unit-II : Approaches to teaching of English

● Motivation : a prerequistie of language learning ● The behaviouristic Approach : Translation and Grammar method, Audio-lingual drills. ● The cognitive perspective on language learning ● Structural approach ● Communicative approach ● Whole language approach

● The constructivist classroom :

* Role of a Teacher at different levels * Classroom organisation at different levels * Text-book and other resources for language learning at different levels.

Unit-III : Teaching of English : Changing paradigm in curriculum

● Comparative study of different syllabi of English : Syllabus of English (NCERT), Syllabus of English (SCERT) Bihar, Syllabi of English of other states. ● BCF-2008 (SCERT)—with special focus on language teaching. ● NCF-2005 NCERT)—with special focus on language teaching. ● NCFTE-2009—with special focus on preparation of language teachers.

Unit-IV : Development of Language skills

A. Listening and Speaking

● "Listening" Vs "hearing" ● Listening with comprehension ● Organising various listening activities : public announcements, simple instructions, telephonic conversation, classroom discussion, ratio/T.V. news, sports commentary etc. ● Components of listening : Intensive & Extensive ● Sound system of language—Articulation of sounds ● Repetition of pronounced written letters and works ● Stress & Intonation ● Types of oral communication ● Creating opportunities for using spoken English within the classroom ● Classroom interaction, recitation, story telling, use of multimedia in language teaching and CALL (Computer Aided language learning) ● Testing listening and speaking skills at different levels.

B. Reading

- Reading with abilty :

  * Decoding unfamiliar/unknown words * Word recognition skills * Guided reading

- Reading with understanding :

  * Extensive and intensive reading   * Skimming and scanning
  * Marking inferences, analysis and   * extrapolation

● Loud reading and silent reading ● Reading different literary genres ● Use of dictionaries, e-dictionaries and web pages ● Testing reading at different levels.

C. Writing

- Mechanism of writing—strokes and curves, features of handwriting of handwriting development, the script of language
- Spelling : stages of development
- Different types of writing tasks :

  * Translation, Dictation, Picture stories * Controlled, guided and free composition * Writing letters, application, reports, messages, memos, notices and posters * Writing Paragraph and short essay

- Writing as a process and product
- Testing writing at different levels.

Unit-V : Lesson Planning

- Concept, importance and steps of Lesson planning.
- Lesson plan based on constructivist approach for :
  * Picture story * Rhymes * Four skills * Integrated grammar.

Suggestive Works :

- List out the resoruces for language learning at different levels.
- Make a list of words which have different syllables stressed when used as different parts of speech.
- Choose two passages—one for evaluating skimming and scanning skills and another for skill of making inferences—and frame questions accordingly.
- List out the problems that your students had in your class and write in detail the measure you took to overcome these problems.
- Develop reading material/activities essentially needed for developing listening and speaking skills.
- Collect at least 100 words of English (or as many as possible) that a child knows before coming to school.
- Make list of words in English where p, r, l, k d sounds are not pronounced.
- Listen to radio news in English and list some of the important news of the day.
- Watch a TV serial and write a gist of it in your own words.
- Make a glossary of homophones.
- Choose any lesson from the textbook and demonstrate the rationale behind the selection of that lesson in the light of the state curriculum.
- Make a comparative study of the national syllabus and the state syllabus of English.

सन्दर्भित पुस्तक

E0627 Teaching of English —**Dr. N. R. Sharma**

गणित का शिक्षणशास्त्र-1

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : गणित : एक परिचय

● दैनिक जीवन में गणित : आवश्यकता एवं महत्त्व ● गणित की प्रकृति ● गणित के बारे में भय, भ्रम और मिथक ● गणित के विभिन्न आयाम—अवधारणा (प्रत्यय), प्रक्रिया, संकेत एवं भाषा ● गणितीयकरण।

इकाई-II : गणित शिक्षण की विधियाँ एवं रणनीतियाँ

● आगमन एवं निगमन विधियाँ ● संश्लेषण एवं विश्लेषण विधियाँ ● रचनावाद : पियाजे के सन्दर्भ में।

इकाई-III : संख्याएँ

● संख्या पूर्व तथा संख्या की अवधारणा ● संख्या प्रत्यय एवं विभिन्न संकेतों के माध्यम से संख्याओं की प्रस्तुति ● अंक व संख्या-निर्माण ● गिनती, संख्या व स्थानीय मान ● भिन्न एवं दशमलव भिन्न : प्रत्यय एवं संक्रियाएँ ● गणितीय संक्रियाएँ एवं उनमें अन्तर्सम्बन्ध।

इकाई-IV : आकृतियाँ एवं पैटर्न

● 2D (द्विविमीय) आकृतियाँ एवं 3D (त्रिविमीय) वस्तुएँ—पहचानना एवं उसकी समझ ● बिन्दु, रेखा, किरण, रेखाखण्ड एवं कोण का प्रत्यय ● विभिन्न आकृतियों के ज्यामितीय निहितार्थों की समझ ● विभिन्न संख्याओं एवं आकृतियों के सन्दर्भ में पैटर्न की अवधारणा एवं उनका प्रयोग

इकाई-V : मापन एवं आँकड़े

● मापन का अर्थ एवं उसकी आवश्यकता ● अमानक एवं मानक इकाइयाँ ● लम्बाई, भार, धारिता, मुद्रा और समय ● आँकड़ों का प्रत्यय तथा प्रस्तुतीकरण।

इकाई-VI : शिक्षण अधिगम योजना और मूल्यांकन

● सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन ● गणित के सन्दर्भ में अधिगम का आकलन ● इकाई योजना एवं पाठ योजना ● शिक्षण अधिगम गतिविधियाँ तथा सामग्री ● मनोरंजक गणित—गणितीय खेल एवं पहेलियाँ ● आकलन की प्रविधियाँ—अवलोकन, समवय समूह, परियोजना कार्य, औपचारिक बातचीत।

प्रस्तावित कार्य

● गणित से सम्बन्धित दो-दो लेखों व शोध-पत्रों का समीक्षात्मक अध्ययन करना। ● विभिन्न प्रत्ययों से सम्बन्धित परिमार्जित शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करना। ● ज्यामितीय आकृतियाँ के चित्रात्मक प्रदर्शन सम्बन्धी चार्ट/कार्ड तैयार करना। ● प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं में पायी जाने वाली सममिति को खोजना। ● गणितीय कोना की स्थापना करना। ● अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ इकट्ठा करना एवं पहेलियाँ बनाना। ● अपने साथी प्रशिक्षु के कक्षा शिक्षण का विश्लेषणात्मक अवलोकन करना। ● गणित की किसी अवधारणा के विकास के लिए प्रत्यय मैपिंग करना। ● कक्षा 1 से 5 की पाठ्य-पुस्तक के किसी अध्ययन से सम्बन्धित विषय-वस्तु का विश्लेषण करना। ● विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के लिए पाठ-योजना तैयार करना। ● गणित के विभिन्न प्रत्ययों के अधिगम से सम्बन्धित क्रियात्मक अनुसंधान करना। ● सतत् व व्यापक मूल्यांकन के लिए कुछ क्रिया-कलाप तैयार करना। ● दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाईयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित करना।

सन्दर्भित पुस्तक

E0625 गणित का शिक्षणशास्त्र —राणा बलवन्त

पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

पूर्णांक : 100 (70 + 30) न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी

इकाई-I : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

● प्रकृति एवं क्षेत्र। ● उद्देश्य एवं महत्त्व। ● बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2008 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के सन्दर्भ में पर्यावरण अध्ययन। ● पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप में (एकीकृत उपागम)। ● प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन का संयोजन व विस्तार—पर्यावरणीय प्रकरण (थीम) के प्रमुख आधार परिवार, मित्र, जल, भोजन, आवास, यात्रा, वस्तुओं का निर्माण एवं व्यवहार।

इकाई-II : पर्यावरण अध्ययन के सन्दर्भ में हमारा एवं बच्चों का परिवेश

● बच्चों के परिवेश सम्बन्धी अनुभव, शिक्षण के आधार के रूप में। ● परिवेश की विविधता की समझ। ● अपने परिवेश से अन्य परिवेशों की तुलना। ● परिवेश के पर्यावरण सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह व विश्लेषण।

इकाई-III : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र (शिक्षण-अधिगम विधियाँ)

● अवलोकन विधि ● खोज/अन्वेषण विधि ● प्रोजेक्ट विधि ● परिभ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि ● प्रयोग विधि ● गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम ● सामूहिक क्रियाकलाप ● प्रदर्शन/चर्चा एवं संवाद आधारित विमर्श।

इकाई-IV : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में अध्यापक की भूमिका

● विषय-वस्तु का सुनियोजन ● विद्यार्थियों के सन्दर्भ की समझ ● स्थानीय संसाधनों का शिक्षण में उपयोग ● नवाचारी प्रयोगों/अनुभवों का सृजन ● चिन्तनशील शिक्षण (Reflective Teaching) ● अन्य शिक्षकों के संस्मरणों का अध्ययन एवं विश्लेषण

इकाई-V : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में आकलन एवं मूल्यांकन

● छात्र-अनुक्रिया का विश्लेषण ● विद्यार्थियों के कार्यों का बहुआयामी आकलन ● सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के सिद्धान्त एवं व्यवस्थित प्रक्रिया ● साक्ष्य-आधारित मूल्यांकन ● अपने अध्यापन कार्य के विश्लेषण एवं सुधार का आधार।

सन्दर्भित पुस्तक

E0624 पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र —डॉ. एम. के. गोयल

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र-1

पूर्णांक : 100 (70 + 30) **न्यूनतम स्वाध्याय अवधि : 70 घंटी**

इकाई-I : प्राथमिक स्तर पर हिन्दी-शिक्षण के उद्देश्य

● राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के आलोक में कक्षा 1 से 5 के लिए अनुमोदित हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना। ● विद्यार्थियों को अपने विचारों, अनुभवों को अपनी भाषाओं में संवाद व काम करने की अवसर उपलब्ध करवाना। ● कक्षा के बहुभाषिक वातावरण का उपयोग हिन्दी सीखने में करना। ● बच्चों की बातचीत करने की आदत का उनके भाषा विकास में उपयोग करने के तरीकों को समझना। ● बच्चों को अपनी ही भाषा की मदद से व्याकरण के नियमों को समझने हेतु प्रोत्साहित करना।

इकाई-II : भाषाई कौशलों का विकास : सुनना व बोलना

● भाषाई कौशलों की संकल्पना : भाषाई कौशलों के प्रकार, अर्थ एवं उनके आपसी सम्बन्ध। ● सुनने व बोलने का अर्थ। ● सुनने व बोलने को प्रभावित करने वाले कारक। ● प्रशिक्षुओं की मौखिक अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास—अपने बारे में बात करना, स्कूल अनुभवों पर बात करना, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तारित कर पाना, परिचित सम-सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना। धारा प्रवाहित व सटीकता से अभिव्यक्त करना। प्रशिक्षुओं को कहानी, नाटक रचने तथा प्रस्तुत करने का अवसर देना।

● बच्चों को कक्षा में सुनने व बोलने के मौके उपलब्ध करवाना—

* बालगीत/कविता सुनाना। (कविताओं व बालगीतों के उदाहरण प्राथमिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकों से भी लिए जाएँ) * चित्रों पर चर्चा करवाना। * कहानी सुनना व उन पर सवालों के माध्यम से चर्चा करवाना। * दिए गए शब्दों से कहानी सुनाना। * नाटक/रोल प्ले करवाना। * अवलोकनों का वर्णन करने के अवसर उपलब्ध करवाना। * अवलोकन करवाना, वर्णन करना तथा अपने द्वारा किये गये वर्णन में सुधार करना।

इकाई-III : पढ़ने के कौशल का विकास

● पढ़ने का अर्थ—शुरूआती पढ़ना क्या है, शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना, पढ़ना व वाचन में अन्तर। ● पढ़ने की प्रक्रिया और विभिन्न सोपानों में अनुमान

लगाने, अर्थ समझने, लिपि पहचानने, पढ़कर प्रतिक्रिया देने, पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्त्व। ● पढ़ने के प्रकार—सस्वर, मौन पटन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, स्किप रीडिंग आदि। ● पढ़ना सिखाने के तरीके—वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि, सन्दर्भाधारित उपागम। ● पढ़ना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका।

इकाई-IV : लिखने के कौशल का विकास

● लेखन का अर्थ—संकल्पना व विकास। ● शुरुआती लेखन—संकल्पना और विकास। ● लेखन की चरणबद्ध प्रक्रिया—आड़ी-तिरछी रेखाएँ, प्रतीकात्मक चित्र, स्व-वर्तनी, पारम्परिक लेखन की ओर। ● पढ़ना और लिखना में सम्बन्ध। ● लेखन की विशेषताएँ—सरल, जटिल, आलंकारिक आदि। ● प्राथमिक कक्षाओं में लेखन कौशल के विकास के तरीके—चित्र बनाना, रेखाचित्र से कहानी बनाकर लिखना, अपनी रुचि की चीजों के बारे में लिखना, कहानी को आगे बढ़ाकर लिखना, श्रुतिलेख, लयात्मक शब्द से तुकबन्दी करना। ● लिखना सिखाने में आने वाली समस्याएँ व उनके समाधान के तरीके—क्या ये वास्तव में समस्याएँ हैं या बच्चों द्वारा सीखने की प्रक्रिया के स्वाभाविक चरण। ● लेखन के विभिन्न प्रकार—पत्र लेखन, कहानी लेखन, निबन्ध लेखन, विज्ञापन लेखन, फार्म भरना इत्यादि।

इकाई-V : पाठ योजना और कक्षा प्रक्रियाएँ

● पाठ योजना का अर्थ, आवश्यकता और महत्त्व। ● पाठ योजना के प्रकार। ● रचनात्मक शिक्षण उपागम और पाठ-योजना। ● पाठ योजना और रचनात्मक कक्षा प्रक्रियाओं में सम्बन्ध।

इकाई-VI : हिन्दी शिक्षण में मूल्यांकन

- **मूल्यांकन का अर्थ**

  * सीखने की प्रक्रिया के रूप में। * शिक्षार्थी को सीखने में मदद करने के रूप में। * शिक्षातन्त्र को प्रतिपुष्टि देने के रूप में। * उत्पाद तथा प्रक्रिया के रूप में। * आकलन व मूल्यांकन में सम्बन्ध। * सीमित या समग्र पक्षों का मूल्यांकन करने के रूप में। * सीमित समय में या सतत् मूल्यांकन के रूप में। * प्राथमिक कक्षाओं के सन्दर्भ में भाषा में प्रवाहशीलता और सटीकता के सम्बन्धों को समझाना।

- **भाषा में मूल्यांकन और तरीके**

  * विभिन्न कौशलों का मूल्यांकन * मौखिक मूल्यांकन * अवलोकन * लिखित मूल्यांकन * प्रस्तुति * अभिनय।

प्रस्तावित कार्य—

- बड़े आकार के दस ऐसे चित्रों का चुनाव कीजिए जिनका उपयोग पहली इसकी कक्षा के विद्यार्थियों को बातचीत के अवसर उपलब्ध करवाने हेतु किया जा सकता है। प्रत्येक चित्र के साथ उसके चुनाव के कारण देते हुए फाइल तैयार कीजिए।
- किसी एक विद्यार्थी को लगभग 200 शब्दों का एक अपठित गद्यांश देकर उससे पढ़ने को कहें। उसके आधार पर उसके पढ़ने की क्षमता का आकलन करने के लिए आप क्या और कैसे करेंगे ? एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।
- चौथी या पाँचवीं के एक विद्यार्थी को एक परिचित विषय तथा एक कम परिचित विषय पर लिखने को कहें। उसके लिखे का विश्लेषण कर यह पता लगाए कि लिखने में कौन-सी बातें मदद करती हैं ?

सन्दर्भित पुस्तक

E0626 हिन्दी का शिक्षणशास्त्र —डॉ. रामशकल पाण्डेय

F-SEP (प्रथम वर्ष) एवं S-SEP (द्वितीय वर्ष)

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम

(School Experience Programme)

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के केन्द्र में एक सजग, सक्रिय और प्रतिबद्ध शिक्षक का होना आवश्यक है। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह शिक्षक स्कूली गतिविधि के विभिन्न आयामों को न सिर्फ समीक्षात्मक ढंग से समझे बल्कि वह कुशलतापूर्वक इससे जुड़ी गतिविधियों को अंजाम भी दे सकें। पिछले दो-तीन दशकों में सिद्धान्त और व्यवहार का अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर उन्हें एक-दूसरे की कसौटी पर कसने की प्रक्रियाएँ लगातार बढ़ी हैं। कहने को प्रत्येक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में 'शिक्षण-अभ्यास' उसका एक अनिवार्य हिस्सा होता है, पर ऐसा कम ही हो पाता है कि शिक्षायी चिन्तन को सक्रिय रूप से शिक्षण अभ्यास का हिस्सा बनाया जाये। नतीजतन शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सिद्धान्तों को जपने की प्रवृत्ति तो बढ़ती ही है साथ ही शिक्षण अभ्यास एक हस्तक्षेपकारी अनुभव होने की बजाय महज एक अकादमिक कवायद बनकर रह जाती है। शिक्षण अभ्यास को शिक्षा के सिद्धान्तों, शिक्षण-शास्त्र व शिक्षायी चिन्तन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कोशिश यह है कि शिक्षण-अभ्यास के अनुभव शिक्षायी विमर्श को समझने का आधार बनें तथा शिक्षायी विमर्श, शिक्षण-अभ्यास को और समीक्षात्मक बनाने में मददगार बने। विद्यालय अनुभव कार्यक्रम से तात्पर्य है विद्यालय में होने वाले कार्यों व गतिविधियों का समग्र अनुभव। इसका मूल उद्देश्य प्रशिक्षुओं में शिक्षण अभ्यास के साथ-साथ विद्यालय से जुड़े अन्य गतिविधियों की समझ भी विकसित करना है। साथ ही, इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षु अपने शिक्षण व विद्यालय में अपनी भूमिका के प्रति एक आलोचनात्मक व मननशील दृष्टिकोण भी विकसित कर पाएँगे।

इस कार्यक्रम के मूलत: चार अवयव हैं—
शिक्षण अभ्यास एक्शन रिसर्च विद्यालय आधारित गतिविधि विद्यालय उन्नयन योजना

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के मूल्यांकन की रूपरेखा

विद्यालय अनुभव कार्यक्रम	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम के आकलनकर्ता		अंक
शिक्षण अभ्यास	प्रशिक्षण संस्थान के संकाय सदस्य/विषय विशेषज्ञ/ प्रशिक्षक द्वारा लिखित पाठ योजना की गुणवत्ता का मूल्यांकन		20
	प्रसिक्षण संस्थान के संकाय सदस्य द्वारा कक्षा शिक्षण का अवलोकन, समीक्षा एवं मूल्यांकन	संकाय सदस्य (रेगुलर) द्वारा	60
		संकाय सदस्य (रोटोनल) द्वारा	20
	विद्यालय प्रधानाचार्य/विज्ञान शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण का अवलोकन, समीक्षा एवं मूल्यांकन		20
एक्शन रिसर्च	विद्यालय में जाने वाले संकाय सदस्य (रेगुलर) द्वारा आकलन		30
विद्यालय आधारित गतिविधि	विद्यालय में जाने वाले संकाय सदस्य (रेगुलर) द्वारा आकलन		25
विद्यालय उन्नयन योजना	विद्यालय में जाने वाले संकाय सदस्य (रेगुलर) द्वारा आकलन		25
		कुल अंक (प्रति वर्ष)	200
विद्यालय अनुभव कार्यक्रम प्रथम वर्ष (F-SEP) तथा द्वितीय वर्ष (S-SEP)		200 + 200 कुल योग	400

शिक्षण अभ्यास

शिक्षण अभ्यास के क्रम में आलोचनात्मक शिक्षणशास्त्र को समझना और उसे अभ्यास क्रम का हिस्सा बनाना इस पाठ्यचर्या का प्रमुख उद्देश्य है। यहाँ जरूरत होती है कि हम शिक्षण अभ्यास के क्रम में अपनी जिम्मेदारी (अकादमिक, सैक्षिक व सामाजिक) को शिक्षा के वृहत्तर परिणाम व लोकतांत्रिक समाज के सन्दर्भ में समझें। कक्षा के भीतर की प्रक्रिया कोई पृथक घटना नहीं है, बल्कि इसका गहरा जुड़ाव विभिन्न सामाजिक व ऐतिहासिक प्रक्रियाओं से होता है। शिक्षक अपने सार्थक कर्म के माध्यम से असमान सामाजिक व्यवस्थाों के विरुद्ध हस्तक्षेप करता है। उसकी यह भूमिका एक सांस्कृतिक कर्मी की तरह होती है। शिक्षण-अभ्यास में इस बात का विशेष ध्यान रखा जायेगा कि प्रशिक्षु-शिक्षक न सिर्फ शिक्षा के तकनीकी पक्ष को समझ पायें बल्कि वे अपनी हस्तक्षेपकारी भूमिका को भी साकार रूप दे सकें। कोशिश यह होनी चाहिए कि वे अनुभवों के जरिये रूढ़िवादी सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं को तार्किक ढंग से चुनौती दे सकें। इस क्रम में वे न सिर्फ पाठ-योजना बनाएँ बल्कि वहाँ पढ़ाये जाने वाले विषयों पर एक आलोचनात्मक समझ भी विकसित करने की कोशिश करें। विद्यालय से लौटने के बाद वे सचेत और सक्रिय तौर से वहाँ के विभिन्न क्रिया-कलापों को अपनी डायरी में दर्ज करें।

शिक्षण अभ्यास से सम्बन्धित प्रमुख सूचनाएँ निम्नलिखित हैं—

अवधि—

- प्रति वर्ष चालीस (40) कार्य दिवस (प्रथम वर्ष/द्वितीय वर्ष)
- लगभग दस (10) सप्ताह
- प्रति सप्ताह पाँच (05) दिन (सोमवार-शुक्रवार)
- शनिवार को प्रशिक्षु पाठ योजना निर्माण व परामर्श के लिए संस्थान जाएँगे।

पाठ योजना—

- प्रति वर्ष न्यूनतम अस्सी (80) पाठ योजनाओं का निर्माण व शिक्षण।
- प्रति विषय न्यूनतम पाँच (05) पाठ योजनाओं की संकाय सदस्य/विषय-विशेषज्ञ/ प्रशिक्षक द्वारा समीक्षा व सुझाव।
- विषयवार पाठ योजनाओं का संख्या निम्नलिखित है—

विषय	पाठ योजनाओं की न्यूनतम संख्या	
	प्रथम वर्ष (F-SEP)	द्वितीय वर्ष (S-SEP)
गणित का शिक्षण	20	20
अंग्रेजी का शिक्षण	20	20
हिन्दी का शिक्षण	20	—
पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण	20	—
विज्ञान/सामाजिक अध्ययन का शिक्षण	—	20
हिन्दी/उर्दू/संस्कृत/बांगला/मैथिली भाषा का शिक्षण	—	20
पाठ योजनाओं की कुल न्यूनतम संख्या	**80**	**80**

एक पाठ योजना से तात्पर्य एक अध्याय अथवा इकाई नहीं है। बल्कि, एक पाठ योजना से तात्पर्य है एक कालांश के लिये शिक्षण की रूपरेखा। एक ही अध्याय अथवा इकाई में इसके कई शीर्षकों व अवधारणाओं को लेकर कई पाठ-योजनाएँ बनायी जा सकती हैं। पाठ-योजना का निर्माण कैसे किया जाये, इसकी चर्चा प्रशिक्षण संस्थान में किया जायेगा।

प्रशिक्षुओं द्वारा बनाये गये पाठ योजनाओं की समीक्षा व सुझाव प्रशिक्षण संस्थान के संकाय सदस्य/विषय-विशेषज्ञ/प्रशिक्षक द्वारा की जायेगी। प्रत्येक विषय के लिए बनाये गये पाठ योजनाओं में से न्यूनतम पाँच (05) पर संकाय सदस्य/विषय-विशेषज्ञ/प्रशिक्षक से चर्चा एवं सुझाव लेना अनिवार्य है। लिखित पाठ योजनाओं का मूल्यांकन भी संकाय सदस्य/ विषय-विशेषज्ञ/प्रशिक्षक द्वारा किया जायेगा (विद्यालय अनुभव कार्यक्रम की अंक-तालिका देखें)।

कक्षागत शिक्षण—

शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रतिदिन अधिकतम दो पाठ-योजनाओं का शिक्षण मान्य होगा।

पाठ-योजनाों के शिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं का मूल्यांकन भी अति आवश्यक है। मूल्यांकन के अन्तर्गत प्रति विषय न्यूनतम पाँच (05) कक्षाओं का पर्यवेक्षण अनिवार्य है।

यह स्पष्ट कर दें कि विद्यालय में जाने वाले संकाय सदस्यों (रेगुलर व रोटेशनल, दोनों) का मुख्य कार्य प्रशिक्षु-शिक्षकों को सलाह देना व उनसे विभिन्न विषयों पर संवाद करने का होगा।

संकाय सदस्य का 'रेगुलर' अथवा 'रोटेशनल' होने का तात्पर्य विद्यालय विशेष के सन्दर्भ में है। वैसे संकाय सदस्य, जिन्हें किसी विद्यालय में प्रशिक्षुओं के शिक्षण-अभ्यास के अवलोकन के लिये नियमित रूप से जाना है, वे विद्यालय विशेष के सन्दर्भ में संकाय सदस्य (रेगुलर) कहलायेंगे। वैसे संकाय सदस्य, जो स्वयं को आवंटित विद्यालय से भिन्न किसी अन्य विद्यालय में प्रशिक्षुओं के शिक्षण-अभ्यास के लिये समय अन्तराल पर जायेंगे, वे उस विद्यालय के सन्दर्भ में संकाय सदस्य (रोटेशनल) कहलायेंगे। इस प्रकार एक ही संकाय सदस्य अपने विद्यालय के लिये 'रेगुलर' तथा किसी अन्य विद्यालय के लिये 'रोटेशनल' हो सकता है।

स्वमूल्यांकन—

प्रशिक्षुओं द्वारा अपने शिक्षण का स्वमूल्यांकन भी अति आवश्यक है। इसके बिना शिक्षण-अभ्यास की पूरी प्रक्रिया अधूरी है। प्रशिक्षु अपना स्वमूल्यांकन मूलतः दो माध्यमों से करेंगे—

- **प्रशिक्षु डायरी**—पूरे शिक्षण अभ्यास के दौरान प्राप्त चुनौतियों व अनुभवों को प्रशिक्षुगण दिनवार अपनी डायरी में लिखेंगे तथा अपने प्रशिक्षण संस्थान के संकाय सदस्य/प्रशिक्षक के साथ चर्चा करेंगे। इसके माध्यम से चिन्तन-मनन द्वारा वे स्वयं के शिक्षण की समीक्षा तथा संवर्द्धन कर पायेंगे। पूरे शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रशिक्षुओं को आलोचनात्मक चर्चा हेतु अपनी डायरी के साथ संकाय सदस्य/ प्रशिक्षक से कम से कम तीन बार मिलना अनिवार्य है।
- **विद्यार्थियों का मूल्यांकन**—प्रशिक्षुओं द्वारा अपने शिक्षण का स्वमूल्यांकन विद्यार्थियों के सीखने के आधार पर भी करना अति महत्त्वपूर्ण है। अतः शिक्षण अभ्यास के अन्तिम सप्ताह में वे अपने विद्यार्थियों का मूल्यांकन करें तथा उसकी रिपोर्ट भी तैयार करें। मूल्यांकन का स्वरूप कैसा हो, इसके ऊपर प्रशिक्षण संस्थान में कार्यशालाओं द्वारा विस्तृत चर्चा की जायेगी।

शिक्षा में सूचना व संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

FP-1

इकाई-I : शिक्षण के लिए आई.सी.टी. का परिचय

● आई.सी.टी. की अवधारणा। ● आई.सी.टी.. के विभिन्न तकनीक। ● शिक्षण अधिगम में आई.सी.टी. की उपयोगिता।

इकाई-II : शिक्षण अधिगम में कम्प्यूटर का उपयोग

● कम्प्यूटर तथा इसके इस्तेमाल के विषय में महत्त्वपूर्ण विवरण। ● कम्पयूटर के विभिन्न प्रकार एवं अनिवार्य घटक। ● कम्प्यूटर में स्मृति और भण्डारण व्यवस्था। ● ऑपरेटिंग सिस्टम।

इकाई-III : शिक्षण अधिगम के लिए ऑफिस ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर

● ऑफिस ऑटोमेशन सिस्टम व इसके लिए उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयर। ● वर्ड प्रोसेसर सॉफ्टवेयर व इसके प्रमुख कार्य। ● स्प्रेडशीट व इसके प्रमुख कार्य। ● प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) सॉफ्टवेयर व इसके प्रमुख कार्य। ● शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रस्तुति (प्रेजेंटेशन) सॉफ्टवेयर का उपयोग।

इकाई-IV : शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इंटरनेट

● इंटरनेट से कनेक्शन की प्रक्रिया। ● इंटरनेट ब्राउजर व इसके प्रमुख कार्य। ● ई-मेल तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सन्दर्भ में इसका इस्तेमाल। ● इंटरनेट पर खोज (सर्च) इंजन तथा शिक्षा के सन्दर्भ में इसका इस्तेमाल।

इकाई-V : शिक्षण-अधिगम में ऑफिस ऑटोमेशन सिस्टम का अनुप्रयोग

● शिक्षण अधिगम में वर्ड-प्रोसेसर सॉफ्टवेयर की भूमिका। ● शिक्षण अधिगम में प्रस्तुति सॉफ्टवेयर की उपयोगिता। ● शिक्षण अधिगम के लिए स्प्रेड-शीट की उपयोगिता। ● ऑफिस ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर की मदद से डिजिटल सामग्री या डाटा को तैयार करना। ● सार्वभौमिक उपयोग हेतु हिन्दी भाषा में कम्प्यूटर का संचालन व प्रयोग।

इकाई-VI : शिक्षण अधिगम में इंटरनेट का उपयोग

● प्रकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा आदि विभिन्न विषयों के लिए इंटरनेट संसाधन। ● गूगल डॉक्स और अन्य ऑनलाइन ऑफिस सॉफ्टवेयर के उपयोग व लाभ। ● क्लाउड आधारित भण्डारण (स्टोरेज) जैसे बॉक्स एवं ड्रॉपबॉक्स के लाभ। ● आई.सी.टी. के उपयोग में सुरक्षा का ध्यान—इंटरनेट पर सर्फिंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स। ● ओपन लर्निंग सिस्टम व ऑनलाइन लर्निंग के नए उभरते रुझान।

इकाई-VII : शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अन्य आई.सी.टी. तकनीकी का प्रयोग

● शिक्षण-अधिगम में रेडियो, टेलीविजन का उपयोग। ● हैण्ड हेल्ड उपकरण (जैसे एंड्रायड आधारित उपकरण) का उपयोग। ● वीडियो और ऑडियो सिस्टम का उपयोग। ● शिक्षण-अधिगम के लिए प्रोजेक्टर का उपयोग। ● कुछ शिक्षा उपयोगी हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर संसाधन।

प्रस्तावित कार्य—

- शिक्षण में प्रयुक्त आई.सी.टी. के उपकरणों जैसे—रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर इत्यादि का अध्ययन (परिचय, प्रयोग की विधि, विशेषता, शिक्षण में उपयोगिता)।
- आई.सी.टी. के किन्हीं पांच उपागमों (इंटरनेट, पावरप्वाइंट, ऑडियो-विजुअल रिकॉर्डिंग, डॉक्युमेंट्री शो, ई-मेल, फिल्म, रेडियो-ज्ञानवाणी, दूरदर्शन-ज्ञानदर्शन व अन्य शैक्षिक कार्यक्रम आदि) के प्रयोग के कौशल को सीखना।
- किसी वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर का प्रयोग कर शिक्षण अधिगम के लिए आई.सी.टी. कौशल कोर्स में अपने अनुभवों के आधार पर एक रिपोर्ट तैयार करें।
- आई.सी.टी. का प्रयोग करते हुए शिक्षण अभ्यास के दौरान न्यूनतम पाँच पाठ-योजनाओं का निर्माण तथा कक्षा-कक्ष में शिक्षण।
- आई.सी.टी. से सम्बन्धित अपने कौशलों को निम्न सॉफ्टवेयर के आधार पर एक पाँच पैमाने बिन्दु स्केल (बहुत अच्छा, सन्तोषजनक, औसत, अच्छा, असन्तोषजनक) पर रेट करें—

  वर्ड प्रोसेसर (वर्ड), स्प्रेडशीट (एक्सेल), प्रेजेंटेशन (पीपीटी) तथा इंटरनेट ब्राउजिंग।

सन्दर्भित पुस्तक

E0651, शिक्षा में सूचना व संचार तकनीकी —डॉ. राखी अग्रवाल

जीवन कौशल, योग व स्वास्थ्य शिक्षा

पूर्णांक : 50

जीवन कौशल—

● अवधारणा, महत्त्व एवं आवश्यकता। ● जीवन कौशलों की पहचान व उनके प्रकार। ● जीवन कौशलों का दैनिक जीवन में प्रयोग। ● शिक्षण-प्रशिक्षण के दौरान जीवन कौशलों का विकास। ● जीवन कौशलों का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उपयोगिता।

योग शिक्षा—

● अवधारणा, महत्त्व, एवं आवश्यकता। ● योग आसनों की विशेषताओं का अध्ययन। ● योग का दैनिक जीवन में प्रयोग। ● विद्यालय में योग शिक्षा का प्रसार।

स्वास्थ्य शिक्षा—

● बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताएँ। ● बच्चों के स्वास्थ्य का सीखने पर प्रभाव। ● विद्यालय में पोषण—मध्याह्न भोजन। ● विद्यालय परिवेश एवं स्वास्थ्य। ● प्राथमिक उपचार के उपकरण एवं प्रयोग। ● कुपोषण की समझ तथा इसके उन्मूलन के उपाय। ● खेलकूद और शारीरिक स्वास्थ्य में सम्बन्ध।

प्रस्तावित कार्य—

● जीवन कौशल की अवधारणा व इसके अवयवों का अध्ययन। ● अपने शिक्षण के अन्दर प्रयुक्त विभिन्न जीवन कौशलों को चिह्नित करना, व उनके विकास की सम्भावना के लिए सुझाव एकत्रित करना। ● किन्हीं पाँच योग आसनों के विशेषताओं का अध्ययन व दैनिक प्रयोग। ● अपने संस्थान में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन। ● निकटवर्ती स्वास्थ्य केन्द्र में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन। ● विद्यालय में योग व स्वास्थ्य शिक्षा से सम्बन्धित कार्यशालाओं का अध्ययन।

अन्य सन्दर्भित पुस्तकों की सूची

E0330	भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ (वृहद संस्करण)—**पी. डी. पाठक**
EG002	History & Problems of Indian Education—**Dr. S. P. Chaube**
E0094	भारत में शिक्षा का विकास—**डॉ. एस. जी. डी. त्यागी**
E0141	भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास—**डॉ. रामशकल पाण्डेय**
E0223	आधुनिक भारत में शिक्षा—**डॉ. के. सी. अग्रवाल**
E0106	उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक—**डॉ. रामशकल पाण्डेय**
E0172	अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया—**हन्फी**
E0378	अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया—**डॉ. सिंह, डॉ. यादव**
E0122	बाल विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया—**नौटियाल**
E0425	बाल विकास—**नियति पाण्डेय/डॉ. रेनू श्रीवास्तव**
E0379	बाल विकास एवं सीखना—**मुक्ता सिकरवार**
E0133	बाल मनोविज्ञान—**डॉ. आभारानी विष्ट**
E0134	बाल मनोविज्ञान—**डॉ. आभारानी विष्ट**
E0346	शैक्षिक मनोविज्ञान—**डॉ. आभारानी विष्ट**
E0015	शिक्षा मनोविज्ञान—**डॉ. एस. एस. माथुर**
E0016	शिक्षा मनोविज्ञान—**पी. डी. पाठक**
E0017	शिक्षा मनोविज्ञान (वृहद संस्करण)—**पी. डी. पाठक**
E0322	शिक्षा मनोविज्ञान—**पी. डी. पाठक**
E0107	शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण शास्त्र—**डॉ. सुरेश भटनागर**
EG001	Educational Psychology—**Dr. S. S. Mathur**
EG062	Advance Educational Psychology—**Dr. Sitaram Jaiswal**
E0135	शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत में शिक्षा—**उमा सिंह**
E0072	पाठ्यक्रम विकास—**सीताराम यादव**
E0388	पाठ्यक्रम शिक्षण कला एवं मूल्यांकन—**डॉ. रामपाल सिंह**

❒